DATE 11.11.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- आठवीं सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य ('पाठ-12 बालक हम्मीर') शेष भाग

पुस्तक- नवतरंग - 8

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा आठवीं की हिंदी साहित्य की पुस्तक के पृष्ठ-99 पर दिए पाठ-12 'बालक हम्मीर' के शेष भाग को पढ़ेंगे।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने इस कविता में पढ़ा था कि राणा अजय सिंह अपने भतीजे हम्मीर और बेटों को लेकर अरावली पहाड़ पर बने किले में रह रहे थे क्योंकि अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर कब्जा कर लिया था। मुंज नाम का एक लुटेरा जो किले में आया और राजा अजयसिंह के पास जो थोड़ी बहुत संपत्ति बची थी, वह उसे लूटकर ले गया। उसने जाते-जाते राणा अजयसिंह के मान-सम्मान तथा शरीर को चोट पहुँचाई। वे लज्जित होकर बैठे थे। बालक हम्मीर ने अपने चाचा को दुखी देखा तो वह घबरा गया। उसने उनसे घाव के बारे में पूछा साथ ही उदासी का कारण भी पूछा। अब हम कविता की आगे की पंक्तियाँ पढ़ेंगे।

असली भेद छिपाना चाहा,
कुछ का कुछ समझाना चाहा,
राणा ने कह इधर-उधर कुछ
बच्चे को बहलाना चाहा।

तब तक कहा किसी ने - डाकू मुंज बड़ा भारी है,
उसी दुष्ट ने यहाँ पहुँचकर की हालत सारी है।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

DATE 11.11.24
PAGE No. 2

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-12 'बालक हम्मीर')-2

सुना नाम डाकू का जैसे,
भवें चढ़ीं बालक की वैसे,
राणा सहम उठे घबराकर
रोकें बाल-सिंह को कैसे?

उठे-उठे जब तक राणा, बच्चे को धरें लपटकर,
तब तक तो हम्मीर कूद घोड़े पर चढ़ा झपटकर।

बोला - चचा! भीति मत मानें,
मुझे निरा बालक मत जानें,
बस, मैं तुरंत फिरा आता हूँ
अभी मुंज को लगा ठिकाने।

लेकिन, हाँ, यदि कहीं शत्रु का शीश नहीं पाऊँगा,
शपथ धर्म की मुझे, नहीं यह मुखड़ा दिखलाऊँगा।

बच्चो! कविता की इन पंक्तियों की व्याख्या करने से पहले इनमें आए कुछ कठिन शब्दों के अर्थ जान लेते हैं:— शब्दार्थ

भेद - रहस्य
भीति - डरपोक
सहम - भय, डर
शपथ - सौगंध, कसम

कवि 'दिनकर' जी लिखते हैं कि बालक हम्मीर ने अपने चाचा से उनकी उदासी का कारण पूछा तो राणा अजयसिंह ने अपनी उदासी के असली रहस्य को छिपाना चाहा। वे कुछ न कुछ करके बालक को समझाना चाहते थे। उन्होंने इधर-उधर की बात करके बालक हम्मीर को बहलाने की कोशिश की। उन्हें लगा कि बच्चा

Scanned with CamScanner

DATE 11.11.24
PAGE No. 3

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-12 'बालक हम्मीर')-2

उन्हें लगा कि बच्चा कुछ न कुछ समझाकर बहल जाएगा और इस बात को भूल जाएगा। इतने में ही किसी ने कह दिया कि मुंज नाम के बहुत बड़े डाकू ने यहाँ आकर यह हालत की है। जैसे ही बालक हम्मीर ने डाकू मुंज का नाम सुना तो क्रोध से उसकी भवें चढ़ गईं। राणा अजय सिंह डर गए, वे घबराकर सोचने लगे कि इस शेर के समान बहादुर बालक को कैसे रोकें?

अभी राणा बालक ह.म्मीर को उठकर शीघ्रता से पकड़ लेंगे यह सोचकर ही वह उठे। लेकिन बालक हम्मीर तो झपटकर घोड़े पर चढ़कर जाने लगा। वह घोड़े पर कूदकर बिजली की गति की भाँति चढ़ा और जाते-जाते अपने चाचा से बोला, चाचा! आप मुझे डरपोक बालक मत समझना और न ही बिल्कुल छोटा बच्चा समझना। मैं डाकू मुंज को ठिकाने लगाकर अर्थात् मारकर तुरंत वापस आता हूँ। चाचा! मैं धर्म की शपथ लेता हूँ कि मैं शत्रु का सिर लेकर ही आऊँगा। यदि मैं शत्रु के सिर को न पा सका तो अपने मुखड़े को नहीं दिखलाऊँगा। अब आगे की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

सहम उठे राणा यह सुनकर
बैठ गए अपना सिर धुनकर,
फटने लगा हृदय पीड़ा से,
बच्चे का साहस गुन-गुनकर।

लगे बिलखने, हाय विवश हम कब तक बने रहेंगे,
अगर अशुभ कुछ हुआ, दाह यह कैसे प्राण सहेंगे?
कसक भोगते, आँखें मलते,
कटी रात करवटें बदलते,
भोर हुआ, दिन चढ़ा और फिर
शाम हुई, दिन ढलते-ढलते।

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

DATE 11.11.24
PAGE No. 4

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिन्दी साहित्य (पाठ-12 'बालक हम्मीर')-2

आँखें पथरा गईं, लेकिन नहीं लौटा हम्मीर,
फूट-फूटकर लगे बिलखने राणा बहुत अधीर।

इतने में हिनहिना उठा हय,
बच्चे बोल उठे - जय हो जय!
राणा ने बाहर जो झाँका,
हुआ दूर उनका सारा भय।

घोड़े पर हम्मीर खुशी में भरकर फूल रहा था,
औं' रिकाब से बँधा मुंज का मस्तक झूल रहा था।

शब्दार्थ:-

सिर धुनना - गलती पर पछतावा होना
बिलखना - रोना, विलाप करना
विवश - मजबूर
दाह - अत्यंत दुख, अग्नि की भाँति दुख
कसक - पीड़ा
भोर - सवेरा
आँखें पथरा गईं - राह देखते-देखते आँखें थक जाना
अधीर - उतावला, बेचैन
हय - घोड़ा
रिकाब - घोड़े पर चढ़ने के लिए जिस पर पैर रखा जाता है।

बच्चो! उपरिलिखित पंक्तियों में कवि यह कहना चाह रहे हैं कि राणा अजय सिंह बालक हम्मीर की शपथ सुनकर सहम गए और अपना सिर धुनकर बैठ गए तथा अपनी गलती पर पश्चाताप करने लगे। उनका हृदय पीड़ा से फटने लगा और साथ ही वे

(पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner

DATE 11.11.24
PAGE No. 5

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-12 'बालक हम्मीर') -2

बालक हम्मीर के साहस को याद कर रहे थे। राणा बालक के साहस को याद करके तथा कुछ अनर्थ की आशंका से दुखी हो रहे थे। वे फूट-फूटकर रोने-बिलखने लगे कि आखिर कार हम कब तक इस प्रकार विवश बने रहेंगे। अगर बालक के साथ कुछ अशुभ हो गया तो मेरे प्राण निकल जाएँगे। मैं इस दुख को नहीं सहन कर सकूँगा। उनके हृदय में रह-रहकर कसक अर्थात् पीड़ा हो रही है। सारी रात करवटें बदलते रहे। नींद नहीं आ रही थी। उठ-उठकर आँखें मल रहे थे। सुबह हो गई। दिन निकला और शाम भी होकर ढल गई। बालक हम्मीर की राह देखते-देखते राणाजी की आँखें पथरा गईं लेकिन वह वापस नहीं आया। राणा का धैर्य समाप्त हो गया और वे फूट-फूटकर रोने, बिलखने लगे। इतने में ही उन्हें घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ सुनाई दी। बच्चे प्रसन्न होकर जय हो, जयहो का उच्चारण करने लगे। राणा ने बाहर झाँककर देखा तो उसका सारा भय दूर हो गया। सामने खुशी से फूला घोड़े पर सवार बालक हम्मीर था। उसके घोड़े की रकाब से बँधा डाकू मुंज का मस्तक झूल रहा था। इस प्रकार बालक हम्मीर अपने चाचा राणा अजय सिंह के अपमान का बदला लेने में सफल हुआ।

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। अब मैं गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य:— सब बच्चे इस कविता को अर्थ सहित दो-तीन बार पढ़ेंगे तथा कठिन शब्दों के शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे। पाठबोध के अंतर्गत दिए प्रश्नों के उत्तर लिखने का स्वयं प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner